श्री
रामार्चा माहात्म्य
रामबोधनी टीका सहित
सम्पादक - श्री विमल महाराज जी
Scanned with CamScanner

किया। उनके गर्भ से धर्मज्ञ विश्वामित्र नाम वाले पुत्र हुए, जो क्षत्रिय से ब्रह्मर्षि बन गया। मैंने पहले श्री भृगु जी से श्रीरामार्चा सुनी है। यह सौभाग्य एवं संतति को देने वाली तथा सम्पूर्ण अभीष्टों को पूर्ण करने वाली है। इसलिए हे महाभागे! तुम इस परम सुख देने वाले महायज्ञ को करो। श्री ऋचीक जी का यह वचन सुनकर वह पृथुक ब्राह्मण अपने घर चला गया ।। ११-२० ।।

देवि तत्राकरोत्पूजां नैवेद्यस्य च भक्षणात् ।
महारोगः क्षयं प्राप्तः पृथुकोऽति सुखीऽभवत् ।।२१।।

सत्वरं तत्फलं प्राप्य सदा रामार्चने रतः ।
एकदा पूर्णिमायां तु पृथुको रामपूजनम् ।।२२।।

चकार स्वजनैः सार्द्धं तत्रैको धीवरोऽन्वगात् ।
नित्यं हिंसारतो दुष्टो बंधुको नाम विश्रुतः ।।२३।।

दृष्ट्वा रामाचेन तत्र भुक्त्वा रामान्नमुत्तमम् ।
निर्धनश्चातिलोभेन ययौ देशान्तरं प्रति ।।२४।।
सौराष्ट्रे स मृतो व्याघ्रान्महापापोऽघ संयुतः ।
यमदूताः समाजग्मुः क्रोधवन्तो भयङ्कराः ।।२५।।
पाशैर्बध्वा समानेतुं तदा श्रीरामकिंकराः ।
आजग्मुस्तान्प्रपीड्यो चुरयं शुद्धः सुधार्मिकः ।।२६।।
दण्ड्यः कथं यमाः प्रोचुरयं हि पापविग्रहः ।
गोहन्ता विप्रहन्ता च चौरो हिंसारतः तदा ।।२७।।

हे देवि ! वहां उस ब्राह्मण ने श्रीरामार्चा किया । नैवेद्य के भक्षण से उसका महारोग नष्ट हो गया और पृथुक ब्राह्मण अति सुखी हो गया । तत्काल उसका फल पाकर वह सर्वदा रामार्चा करने लगा । एक समय पूर्णिमा को पृथुक ने श्रीराम पूजन किया । उस पूजा में उसके सब भाई-बन्धु एकत्र थे । उस समय वहां नित्य हिंसा में रत रहने वाला

दुष्ट 'बन्धुक' नाम का प्रसिद्ध धीवर (मल्लाह) चला आया। हे प्रिये ! वहाँ श्री रामार्चा देखकर और श्रीराम जी का उत्तम प्रसाद खाकर वह निर्धन 'बन्धुक' अति लोभ से विदेश चला गया। वह महापापी अघ-संयुक्त सौराष्ट्र देश में बाघ से मारा गया। उसे पाश में बांधकर ले जाने के लिये क्रोधवान् भयंकर यमदूत वहाँ आये। उसी समय श्रीराम जी के पार्षद् वहां आ गये। वे यमदूतों को पीड़ित करके बोले कि यह धीवर तो शुद्ध और अत्यन्त धार्मिक है। यह दण्ड देने योग्य कैसे है ? यमदूत बोले – यह गोहन्ता, विप्रहन्ता, चोर और सदा हिंसारत निश्चय ही पाप विग्रह है ।। २१-२७ ।।

श्री रामपार्षदा ऊचुः –

रामार्चान्नं सकृद्येन भुक्तं पापिप्रपीडकाः।
स शुद्धो धर्म कामार्थी याति रामपुरं शुभम् ।।२८।।
इत्युक्त्वा पुष्पके न्यस्य तं च रामान्तिकं ययुः ।।२९।।

यमदूता यमं गत्वा वृत्तान्तं तन्न्यवेदयन् ।
यमो विचिन्त्य रामस्य प्रभावं मनसा महत् ॥३०॥

श्रीरामजी के पार्षद बोले – हे पापियों को पीड़ा देने वाले यमदूतों ! जिसने एक बार भी श्रीरामार्चा का प्रसाद भक्षण कर लिया है, वह शुद्ध है । धर्म, अर्थ, काम तीनों से युक्त है और शुभ श्रीराम जी के पुर साकेत को जाता है । इतना कहकर उस धीवर को पुष्पक विमान में बैठाकर भगवान राम के पास चले गये । यमदूतों ने यमराज के पास जाकर वह वृत्तान्त सुनाया । यमराज ने मन ही मन श्री भगवान राम के महान प्रभाव का चिन्तन किया ॥ २८–३० ॥

प्रणम्य राघवं दूतानुवाचेश्वरि धर्मराट् ।
सकृदेव कृतं राम कीर्तनं पूजनं सकृत् ॥३१॥

सकृद् भुञ्जीत रामान्नं स वै त्रैलोक्यपावनाः ।
सर्वैरघचयैर्मुक्त पूजनीयः सुरासुरैः ॥३२॥

सत्तमः सर्वभूतेषु रामानुग्रह भाग्यतः ।
रामार्चायाः प्रभावं वै सम्यग्वक्तुं न शक्यते ॥३३॥

रामार्चाः रामरूपेण सिद्धिदा सर्वदेहिनाम् ।
रामार्चया न सिद्धयेद्यत्तन्न पश्यामि किंचन ॥३४॥

दूतान्प्रबोधयित्वा स यमो रामं व्यभावयत् ।
एवं श्रीरामपूजायाः प्रभावमतिदुर्गभम् ॥३५॥

रामार्चा ये प्रकुर्वन्ति देवि मानव सत्तमाः ।
ते वै रामस्वरूपाः स्युः पूज्याः सर्व महर्षिभिः ॥३६॥

अश्वमेधायुतशतं राजसुयशतायुतम् ।
रामार्चायाः प्रसादस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥३७॥

भगवान शंकर बोले हे देवि ? धर्मराज ने श्रीरामजी को प्रणाम कर दूतों से कहा कि जिसने एक बार श्रीराम कीर्तन, एक बार पूजन और एक बार भी श्रीरामजी का प्रसाद खाया हो वह तीनों लोकों को पवित्र करने वाला, सब पापों से मुक्त एवं देवता और दानवों का पूजनीय है ।

रामं समर्च्य रामस्य प्रसादान्नं हनूमते ।
यो ददाति प्रिये तस्य सर्वाभीष्टं प्रसिद्धयति ।।३८।।

यद्यत् श्रीरामचन्द्राय प्रदद्यात् प्रीतिमानसः ।
तत्सर्वं वायुपुत्राय प्रदातब्यं विशेषतः ।।३९।।

रामसिद्धयर्थ रूपोऽयं हनुमान्मारुतात्मजः ।
तस्मात्सर्व प्रयत्नेन तोषयेद्भक्तकामदम् ।।४०।।

जो श्रीराम जी का यथार्थ पूजन करके श्रीराम जी का प्रसाद श्री हनुमानजी को देते

हैं, हे प्रिये ! उनके सब मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं। प्रेमपूर्वक जो-जो पदार्थ श्रीरामचन्द्र जी को अर्पण करे, वह सब विशेष रूप से श्री वायुनन्दन हनुमान जी को भी अर्पित करना चाहिये। वे पवनसुत श्री हनुमान जी राम सिद्धि के स्वरूप हैं। इसलिये सर्व प्रयत्न से भक्तों की कामना पूर्ण करने वाले श्री हनुमान जी को सन्तुष्ट करे ।। ३८-४० ।।

इति श्रीशिव संहितायां भव्योत्तर खण्डे उमामहेश्वर-सम्वादे श्रीरामार्चामाहात्म्ये पृथुक बंधुकोपाख्यान वर्णनो नाम चतुर्थोऽध्याय ।। ४ ।।

।।अथ पञ्चमोऽध्यायः।।

श्री पार्वत्युवाच –

केनान्येन कृतं स्वामिन लोके रामार्चनं शुभम् ।
कथयस्व कृपासिंधो महाह्लादकरं परम् ।।१।।

श्रीपार्वती जी ने कहा – हे स्वामिन् ! हे कृपासिन्धो ! परम आह्लादकर शुभ श्रीरामर्चन और किसने किया है ? कृपया कहें क्योंकि सुनने में बड़ा आनन्द होता है।

श्री महादेव उवाच –

पुरा देवि विशालायां कश्चिद्वैश्योऽवसत्सदा ।
सरमेति तु विख्यातो धनाढ्योऽसत्य संयुतः ।।२।।

देवेभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च प्रतिश्रुत्य न दत्तवान् ।
तेन पापेन भो देवि सर्वैश्वर्यमनश्यत् ।।३।।

दीनोऽतिमलिनो दुःखी बभ्रामाऽति क्षुधार्दितः ।
दरिद्रोऽसह्यदुखेन मरणाय मनोदधे ।।४।।

हिमालयं जगामासौ यत्र नारायणः स्थितः ।
अतिदीनं व्रतरतं दृष्ट्वा नारायणोहरिः ।।५।।

श्री महादेव जी ने कहा – हे देवी ! पूर्वकाल में "विशाला" नगरी मे एक वैश्य रहता

था, वह 'सरम' नाम से विख्यात था। वह धनी और असत्यवादी था। वह देवताओं की मनौती मानकर तथा ब्राह्मण को दान का संकल्प कर न पूजा करता था और न दान देता था। हे देवि ! इस पाप से उसका सारा धन नष्ट हो गया। गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है — **''राम विमुख सम्पति प्रभुताई, जाइ रही पायी बिनु पाई।''** वह अत्यन्त दुःखी, दीन, मलिन भूखा और प्यासा होकर घबराया हुआ इधर-उधर भटकने लगा। उस दरिद्र वैश्य ने असह्य दुःखों से त्रस्त होकर मरने के लिए मन में ठान लिया। वह हिमालय पर्वत पर गया, जहाँ भगवान नारायण स्थित हैं। भगवान नारायण ने उसकी अति दीन दशा देखकर उस पर कृपा की। **प्रणतपाल रघुवंशमणि, करुणासिन्धु खरारि। गये शरण प्रभु राखहिं सब अपराध विसारि** ।। २-५ ।।

धृत्वा तु ब्राह्मणं रूपं जगाम सरमांतिकम्।
सरमं स हरिः प्राह कस्त्वं केनाति दुःखितः ।।६।।

श्रुत्वा तदीरितं वाक्यं प्रणाम्योवाच ब्राह्मणम् ।
अहं वैश्यो महाभाग सरमेति च विश्रुतः ।। ७।।

महासुखी धनाढ्योऽहं पूर्वावस्थासु चोद्धतः ।
न जाने केन पापेन सर्वं नष्टं धनं मम ।। ८।।

अतोऽहं दुखितो दीनो व्याकुलश्चह्युपद्रवैः ।
बन्धुभिः कलहोनित्यं क्षुत्क्षामोऽम्बर वर्जितः ।। ९।।

भिक्षाशीर्मरणप्राय कथं जीवामि भो द्विज ।
तच्छ्रुत्वा ब्राह्मणो देविदयालुर्वाक्यमब्रवीत् ।।१०।।

वैश्य को दुःखी और शरणागत देखकर भगवान नारायण ब्राह्मण का रूप धारण कर सरम के निकट पहुँचे । भगवान् ने सरम से कहा – तुम कौन हो और क्यों अति दुःखी

हो ? उनकी बात सुनकर ब्राह्मण (भगवान) को प्रणाम करके सरम बोला – हे महाभागे! मैं वैश्य हूँ और 'सरम' नाम से प्रसिद्ध हूँ। पहले महा सुखी, धनाढ्य और उद्धत था, न जाने किस पाप से मेरा सब धन नष्ट हो गया। इससे मैं दीन और दुखित हूँ तथा उपद्रवों से व्याकुल हूँ। बन्धुओं से नित्य कलह होता रहता है। क्षुधा से क्षीण और वस्त्रहीन हूँ। भीख माँगकर खाता हूँ और मरणप्राय हूँ। हे द्विज ! मैं कैसे जीऊँ ! हे देवि ! यह सुनकर दयालु ब्राह्मण बोले ।। ६-१० ।।

ब्राह्मण उवाच –

कार्पण्येनातिलोभेन सत्यहीनेन सर्वथा।
प्रणश्यति धनं सौख्यं दुःखं स्यान्नित्यमेव हि ।।११।।

प्रतिज्ञाय न दत्तं ते देवाय ब्राह्मणाय च।
तस्मात्तीब्रतरं दुखं प्राप्यते दुर्मते त्वया ।।१२।।

सर्वथा सत्यवाक्येन रहितोऽहं द्विजोत्तम् ।
प्रतिज्ञाय च न दत्तं देवाय ब्राह्मणाय च ।।१३।।

अकारणेन नष्टं मे सर्वैश्वर्यं सुहृद्गणम् ।
यत्नं वद् महाभागे सुखी येन भवाम्यहम् ।।१४।।

वैश्य ने कहा – हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! मैं सब तरह से सत्य वचन से रहित हूँ । प्रतिज्ञा कर देवताओं और ब्राह्मणों को दान नहीं दिया । अकारण मेरे सब ऐश्वर्य एवं भाई-बन्धु नष्ट हो गये । हे महाभाग ! अब ऐसा उपाय बताइये, जिससे मैं सुखी हो जाऊँ ।। १३-१४ ।।

ब्राह्मण उवाच –

विफलप्रतिज्ञा ये वै रामभक्तेः पराङ्मुखाः ।
धर्माणि प्रलयं यान्ति वंशैर्यमालयम् ।।१५।।

देवाय ब्राह्मणायैव प्रतिश्रुत्यं न यच्छति ।
तं दृष्ट्वा पापनाशाय कुर्याच्चान्द्रायणव्रतम् ।।१६।।

असत्यात्पातकं नास्ति नहि धर्मश्च सत्यतः ।
अतोऽसत्यं परित्यज्य सत्यमाश्रयते सुधीः ।।१७।।

महारोगेण ते युक्ता वंशहीना दरिद्रिणः ।
सविघ्नाः क्रूर कर्माणो ये ह्यसत्यावलम्बिनः ।।१८।।

दुखादुद्धरणन्तेषां दुष्करं जन्मकोटिभिः ।।१९।।

सत्येन मनसैवादि यत्किंचित्कुरुते नरः ।
सत्वरं तत्फलं प्राप्य स्वर्गिभिस्सह मोदते ।।२०।।

ब्राह्मण बोले हे – वैश्य ! जो विफल प्रतिज्ञ और श्रीराम जी की भक्ति से विमुख होते हैं, उनके धर्म नष्ट हो जाते हैं और वंश के साथ यमपुर को जाते हैं जो प्रतिज्ञा कर

देवता और ब्राह्मण को नहीं देता है, उसे देखने से जो पाप लगता है उस पाप के नाश हेतु "चान्द्रायण" जैसा कठिन व्रत करना चाहिये । "चान्द्रायण व्रत एक मास में सम्पन्न होता है । यह व्रत चन्द्र कला की ह्रास वृद्धि के अनुसार भक्ष्य भोज्य की ग्रास में संख्या को घटा-बढ़ाकर किया जाता है। व्रत पालन में संयम-नियम से रहते हुए पूजन हवनादि करना होता है ।"

असत्य से बढ़कर पाप नहीं और सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है । इसलिये बुद्धिमान् असत्य को छोड़कर सत्य का आश्रय लेते हैं । सत्य ही सभी धर्मों का आधार है –

धरमु न दूसर सत्य समाना । आगम निगम पुरान बखाना ।।

जो असत्य का अवलम्बन करते हैं, वह महारोग से युक्त, वंशहीन, दरिद्र, विघ्नों से घिरे हुये, और क्रूर कर्म करने वाले होते हैं । करोड़ों जन्म में भी उनको दुःखों से छुटकारा मिलना कठिन है । मनुष्य सत्य भाव से जो कुछ करता है, उसका फल शीघ्र पाकर स्वर्ग वासियों के साथ आनन्द करता है ।। १५-२० ।।

वैश्य उवाच –

भगवन्सर्वधर्मज्ञ पापे मयि कृपां कुरु ।
भ्रष्टप्रतिज्ञे कृपणे चातिदीने दयानिधे ।।२१।।

नश्यन्ति येन पापानि दुःखानि च ममांजसा ।
तद् वदस्व महाभाग दयां कृत्वा ममोपरि ।।२२।।

वैश्य बोला – हे सर्वधर्मज्ञ, दयानिधे, भगवान ! मुझ पापी भ्रष्ट प्रतिज्ञ, कृपण और अति दीन पर कृपा कीजिये । हे महाभाग ! मुझ पर दया कर वह उपाय कहिये, जिससे मेरे पाप और दुःख बिना श्रम नष्ट हो जाँय ।। २१-२२ ।।

ब्राह्मण उवाच –

रामार्चां कुरु यत्नेन यथाशक्त्या विधानतः ।
तत्कृते पातकं सर्वं नश्यत्येव न संशयः ।।२३।।

ब्राह्मण ने कहा तुम यथाशक्ति विधिपूर्वक सावधानी के साथ श्री रामार्चा करो। उसके करने पर सब पाप नष्ट हो जाते हैं, इसमें सन्देह नहीं ।। २३ ।।

वैश्य उवाच –

विधिं वद् कृपासिन्थो कथं कुर्यात् अर्चनम् ।
येन सर्वा ममापत्तिः सत्वरं नाशमाप्नुयात् ।।२४।।

वैश्य ने कहा – हे कृपासिन्थो ! आप विधि बतलाइए। मैं वह पूजा कैसे करूँ, जिससे मेरी सब आपत्ति शीघ्र ही नष्ट हो जाय ।। २४ ।।

ब्राह्मण उवाच –

विधाय मण्डपं दिव्यं कदलीस्तम्भ मण्डितम् ।
वितानमरुणं पीतं सपताकं सतोरणम् ।।२५।।

तन्मध्ये पूजयेद्रामं दिव्यैर्नानोपचारकैः ।
वैश्यवर्य द्विजान् साधून् पूजयेद्रामपूजने ।।
सोऽत्र सर्वसुखं भुक्त्वा रामेण सह मोदते ।।२६।।

रामार्चायाः प्रसादान्नं यस्तु भुञ्जीत मानवः ।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं प्राप्नुयान्नात्र संशयः ।।२७।।

रामार्चायाः प्रसादान्नं ये त्यजन्ति नराधमाः ।
ते यान्ति नरकं घोरं वंशहीनाः सुदुःखिताः ।।२८।।

रामार्चायाः प्रसादान्नं न प्रयच्छति ये नराः ।
सुहृद्भ्यो बन्धुवर्गेभ्यः स दरिद्रो भवेद् ध्रुवम् ।।२९।।
तस्माद्रामार्चनं कार्यं रामभक्तैः सुहृज्जनैः ।।३०।।

युक्तः समालभेत्क्षिप्रं दुर्लभं वांछितं फलम् ।
इहलोके सुखं भुक्त्वा परस्मिन् मोक्षमाप्नुयात् ।।३१।।

श्रद्धया हि सुकर्त्तव्या वित्तशाठ्यं न कारयेत् ।
हवने चाऽर्चने दाने यत्किंचिद्दीयते नरैः ।।३२।।

रामार्चायां महाभाग कोटिकोटि गुणं लभेत् ।
इत्युक्त्वा विररामासौ ब्राह्मणो देवि धर्मवित् ।।३३।।

ब्राह्मण बोले – केले के स्तम्भों से मंडित लाल पीली चांदनी वाला पताका, तोरण सहित दिव्य मण्डप बनाकर हे वैश्यवर्य ! उसके बीच में नाना प्रकार के दिव्य उपचारों से श्रीराम जी की पूजा करे । श्रीराम पूजा में ब्राह्मण और साधुओं की भी पूजा (सत्कार) करे । यथा – 'पुण्य एक जग महँ नहिं दूजा । मन-क्रम वचन विप्र पद पूजा ।।

जो ऐसा करता है वह इस लोक में सब सुख भोगकर परलोक में श्रीरामजी के साथ आनन्द करता है । यथा – **जीवन सकल जनम फल पाये । अन्त अमरपति सदन सिधाये ।।** जो मनुष्य श्रीरामार्चा के प्रसाद को खाता है, वह दीर्घायु, आरोग्य एवं ऐश्वर्य को पाता है । इनमें सन्देह नहीं । जो नीच मनुष्य श्रीरामार्चा के प्रसाद का त्याग करते हैं वह वंशहीन और दुःखी होकर घोर नरक में जाते हैं । जो मनुष्य श्री रामार्चा का प्रसादान्न बंधुवर्ग और मित्रों को नहीं देता, वह अवश्य दरिद्र (कङ्गाल) होता है । इसलिये श्रीराम-भक्तों तथा मित्रों के साथ श्रीरामार्चा करनी चाहिये । इस प्रकार श्रीरामार्चा करने वाला शीर्घ दुर्लभ वाञ्छित फल को पाता है और इस लोक में सुख भोगकर परलोक में मोक्ष प्राप्त करता है । अतः श्रद्धाः के साथ भली भाँति श्रीरामार्चा करनी चाहिये । इसमें वित्त-शाठ्य (धन की कंजूसी) न करे । हे महाभाग ! श्रीरामार्चा के हवन, पूजन और दान में मनुष्य जो कुछ देते (व्यय करते हैं) उसका कोटि-कोटि गुना प्राप्त करते हैं । हे देवि ! इतना कहकर वे धर्मवेत्ता ब्राह्मण मौन हो गये ।। २५-३३ ।।

सरम उवाच –

केनेयं भो कृता पूर्वमपूर्वा वा द्विजोत्तम ।
तद्वदस्व महाभाग रामार्चायाः कथां शुभाम् ।।३४।।

सरम बोले – हे द्विजोत्तम ! पहले इस श्रीरामार्चा को किसने किया है अथवा यह अपूर्व ही है । यह जानने के लिये इच्छुक हूँ । हे महाभाग ! इसलिये श्रीरामार्चा की पवित्र कथा कहिये ।। ३४ ।।

ब्राह्मण उवाच –

मधुकैटभ नाशाय प्रतिश्रुत्य मया कृता ।
ब्रह्मणा हि कृतापूर्वं सृष्ट्यादौ नारदादिभिः ।।३५।।

इत्युक्ते ब्राह्मणे वैश्यो हरिं ज्ञात्वातिहर्षितः ।
पपात दण्डवद्भूमौ त्राहिमाम् पापिनं प्रभो ।।३६।।

अति प्रेम प्रपूर्णाङ्गं वैश्यं दृष्ट्वा ततः प्रभुः ।
स्वस्वरूपं समास्थाय विधिं तस्मै न्यवेदयत् ॥३७॥

ब्राह्मण बोले – 'मधुकैटभ, दैत्य के नाश के लिये मैंने संकल्प कर सविधि यह पूजा की थी । पहले सृष्टि के आदि में नारदादि के साथ ब्रह्मा ने भी की है । ब्राह्मण के यह कहते ही, वैश्य उन्हें भगवान् जानकर बहुत प्रसन्न हुआ । अनन्दमय होकर वह पृथ्वी पर दण्डवत् कर गिर पड़ा और कहने लगा – हे प्रभो ! मुझ पापी की रक्षा कीजिए । प्रभु ने वैश्य को अत्यन्त प्रेम से परिपूर्ण देखकर अपना स्वरूप प्रगट किया और उसे भी रामार्चा की विधि बतलाई ॥ ३५-३७ ॥

श्री शिव उवाच –

सेतिहासं विधिं श्राव्य हरिरन्तरधीयत ।
सरमेण कृतं देवि विधिना रामपूजनम् ॥३८॥

पूजायां राघवान्नं च वायुपुत्राय चार्पयत् ।
हनुमान् परितुष्टः सन् सर्वैश्वर्यं प्रदत्तवान् ।।३९।।

सोऽभवत्सर्वसौख्याढ्यो धनवान् पुत्र पौत्रवान् ।
इहलोके सुखं भुक्त्वा देहान्ते मोक्षमाप्तवान् ।।४०।।

श्री शिव जी बोले – (ब्राह्मण स्वरूप में) भगवान् इतिहास के साथ विधि सुनाकर अन्तर्ध्यान् हो गये । 'सरम' ने विधि पूर्वक श्रीरामार्चा की । पूजा में भगवान् श्रीराम का प्रसादान्न वायुनन्दन हनुमान् को समर्पित किया । श्री हनुमान् जी ने प्रसन्न होकर उसे सब ऐश्वर्य दे दिये और वह 'सरम' वैश्य सब सुखों से सम्पन्न, धनवान् , पुत्र-पौत्रवान् हो गया। इस संसार में सब सुख भोगकर देहान्त होने पर मोक्ष को प्राप्त किया ।। ३८-४० ।।

इति श्री शिवसंहितायां भव्योत्तरखण्डे उमामहेश्वर सम्वादे श्रीरामार्चा माहात्म्ये सरमोपाख्यान वर्णनो नाम पञ्चमोऽध्यायः ।। ५ ।।

।। अथ षष्टोऽध्यायः ।।

श्री पार्वत्युवाच –

भगवन् कैः प्रकर्त्तव्या वर्णैर्यज्ञोत्तमा शुभा ।
रामार्चा तत्समाचक्ष्व किम्वा सर्वाधिकारिणी ।।१।।

श्री पार्वती जी बोलीं – हे भगवन् ! आप कृपा करके कहिये कि यज्ञों में उत्तम, शुभ श्रीरामार्चा किन वर्णों में करने योग्य है अथवा सबों को अधिकार है । १ ।

श्री शिव उवाच –

ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्वैश्यैः कर्त्तव्यं रामपूजनम् ।
सर्वाश्रमस्थैः कर्त्तव्यं शूद्राणां ब्राह्मणस्मृतम् ।।२।।

उत्तमैर्वस्तुभिर्देवि पुष्पैः पत्रैर्यवांकुरैः ।
तिलैः पीताम्बरैर्दुग्धैः श्रीफलैश्चारु बीजकैः ।।३।।

दिव्यान्नचूर्णकैः सूक्ष्मैर्घृतैर्दिव्यैः सुवस्तुभिः ।
शुद्धया सितया देवि फलैर्नानाविधैः शुभैः ।।४।।

एलादि सौरभैरुग्रैः रामार्चा कारयेत्सुधीः ।
अत्र ते कथयिष्यामि चेतिहासं पुरातनम् ।।५।।

श्री महादेव जी बोले – ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य को (स्वयं) एवं सभी आश्रमियों को श्रीराम पूजन करना चाहिये । शूद्रों की रामार्चा ब्राह्मणों के द्वारा होनी चाहिये । हे देवि! सुबुद्धि वाले पुरुष को चाहिये कि उत्तम वस्तुओं, पुष्पों, पत्रों, यवांकुरों, तिलों, पिताम्बरों, दूध, श्री फल (नारियल, बेल, चारु बीजक (अनार), दिव्य अन्न के सूक्ष्म चूर्ण, घृत, दिव्य सुन्दर वस्तुओं, शुद्ध शक्कर (चीनी), नाना प्रकार के सुंदर फल तथा इलायची आदि सुगंधित पदार्थों से श्रीरामार्चा करे । हे देवि ! यहां पर मैं तुमसे एक पुरातन इतिहास कहूँगा ।।२-५ ।।

कलिंगदेश चोत्पन्नो ब्राह्मणो विमदाह्वयः ।
महापापरतो दुष्टो देशान्निस्सारितो ययौ ।। ६।।

गुर्जरै स महाधूर्त्तो वेश्यासक्तमनस्तदा ।
निर्धनो राजवट्यां वै पुष्प चौर्यं चकार ह ।। ७।।

पुष्पाण्यानीय वेश्यायै रत्यर्थं च ददाति सः ।
एकदा निशि पुष्पाणि चौर्येणादाय दत्तवान् ।। ८।।

तस्य मार्गे च्युतं पुष्पं भूकञ्जस्य वरानने ।
रामार्चार्थे धर्मदत्तो वनपुष्पाय संययौ ।। ९।।

दृष्ट्वा मार्गे च्युतं पुष्पं दिव्यं नव्यं पुटे दधौ ।
अन्यवन्यं समानीय रामार्चा कृतवान् द्विजः ।।१०।।

विमदश्चैकदा धृष्टो ब्राह्मणस्य गृहे शुभे ।
चौर्यं चकार तैर्दृष्ट्वा ताडितो मृत्युमालभत् ॥११॥

तद्वृतं सर्वमाख्यातं यमदूतैर्यमं प्रति ।
यमेनोक्तं महाकल्प मात्रं निरयभागयम् ॥१२॥

पातितुर्निरये श्रुत्वा ययौदूतः प्रहर्षितः ।
तत्रैकं तु विमानं च पुष्पस्यासौ ददर्श ह ॥१३॥

विमानस्थेन देवेन चेत्युक्तो विमदस्तदा ।
अत्र विश्रम्य षण्मासं पुनस्त्वं निरये व्रज ॥१४॥

पुरानीतं त्वया पुष्पं रामार्चार्थे सुसङ्गतम् ।
तत्प्रभावेन भो विप्र विमानमिदमागतम् ॥१५॥

तच्छ्रुत्वा देववाक्यं च प्रहृष्टो विमदोऽब्रवीत् ।
इदं पुष्पविमानं च रामार्चार्थे भवेन्मम् ।।१६।।

'कलिंग देश में' विमद' नाम का एक ब्राह्मण उत्पन्न हुआ । महापाप में रत वह दुष्ट देश से निकाल दिया गया । वह महाधूर्त 'गुजरात' में जाकर एक वेश्या में आसक्त हो गया तथा निर्धन होकर वह राजा के बगीचे में फूल की चोरी करने लगा । फूल लाकर रति के लिए (वेश्या को प्रसन्न करने के लिए) दिया करता था । एक समय रात में उसने चोरी से फूल लाकर वेश्या को दिया । हे सुन्दर सुमुखि ! मार्ग में उसके हाथ से गुलाब का फूल गिर गया । उसी समय संयोगवश 'धर्मदत्त' श्रीरामार्चा के लिए वन-पुष्प लेने को गया तो रास्ते में पड़े हुये नवीन पुष्प (गुलाब) को देखकर उसने उसे दोने में रख लिया। अन्य वन की सामग्री लाकर 'धर्मदत्त' ब्राह्मण ने रामार्चा की । उस ढीठ विमद ने, एक बार ब्राह्मण के शुभ घर में चोरी की । ब्राह्मणों ने उसे देख लिया और इतना पीटा कि वह मर गया । यह वृत्तान्त यमदूतों ने यमराज को सुनाया । यमराज ने कहा कि ये महाकल्प भर नरक का भागी है, इसे नरक में गिराया जाय । यह सुनकर हर्षित होकर दूत उसे

नरक में गिराने को ले चला । वहां उसने एक पुष्प का विमान देखा । विमान पर स्थित देव ने विमद से कहा – तुम छः महीने तक इस सुंदर विमान पर विश्राम करके, फिर नरक में जाओ । पहले तुम्हारे द्वारा लाया हुआ पुष्प (गुलाब का, जो वेश्या के लिये जा रहा था) श्रीरामार्चा के काम में (धर्मदत्त द्वारा) लग गया था । हे ब्राह्मण् ! उसी के फलस्वरूप यह विमान यहां आया है । यह देव वाक्य सुनकर भगवान राम की दयालुता देख विमद को श्रीराम के प्रति प्रेम-भाव बढ़ गया । विमद ने हर्षित होकर कहा – यह मेरा पुष्प विमान श्रीरामार्चा के लिए समर्पित है ।। ६-१६ ।।

इत्युक्ते विमदे देवि पुण्यवृद्धि रिनोऽभवत् ।
सर्व पापक्षयाद्देवि विमदो दिव्यरूपवान् ।।१७।।

ज्वलिताग्नि समाकारो जगाम हरिमन्दिरम् ।
विस्मरणाच्युतं पुष्पं रामार्चार्थे समागतम् ।।१८।।

रामं जगाम विमदो योगिभिश्चाति दुर्लभम् ।
पुनः किं श्रद्धयाआनीत रामार्चायाः धनादिकम् ।।१९।।

समर्पयति शुद्धात्मा स वै याति हरेः पदम् ।
अन्यच्छृणु महेशानि कथां कल्मष नाशिनीम् ।।२०।।

हे देवि ! विमद के इतना कहते ही उसका पुण्य और बढ़ गया । सब पापों के नष्ट हो जाने से विमद दिव्य रूप वाला होकर जलती हुई आग के समान आकार वाला बनकर श्री भगवान के लोक को गया । गिरा हुआ फूल (गुलाब) श्री रामार्चा में लग गया, उसके ही प्रभाव से विमद योगियों से भी परम दुर्लभ श्रीराम धाम को प्राप्त हो गया । फिर जो शुद्धात्मा श्रद्धा से धनादिक श्रीरामार्चा में अर्पण करता है, उसका कहना ही क्या है ? हे महेशानि ! अब पाप नाश करने वाली दूसरी कथा सुनो ।।१७-२०।।

एकदा ब्रह्मणा देवि कृतं रामार्चनं शुभम् ।
सतीनामासि देवेशि यदा त्वं पूर्वजन्मनि ।।२१।।

रामार्चाया प्रसादान्नं प्रेषितं मम सन्निधौ ।
नारदेन समानीतं तत्सर्वं भक्षितं मया ॥२२॥
तस्मिन् काले गता हि त्वं स्नानार्थं च जलाशये ।
स्नात्वा त्वमागता तत्र प्रसादागमनं श्रुतम् ॥२३॥
ममभागं प्रसादान्नं कुत्रास्तिवृषभध्वज ।
प्रेमनिर्भरतो देवि नागता हि तव स्मृतिः ॥२४॥
सकलं भक्षितं भद्रे तव भागो न वर्त्तते ।
इत्युक्ते क्रोधताम्राक्ष्या शापोदत्तस्त्वया शिवे ॥२५॥
त्वदुच्छिष्टं च येऽदन्ति ते श्वानस्युर्न संशयः ।
निरये वै गमिष्यन्ति चेत्युक्त्वा विरराम ह ॥२६॥
लज्जितोहं तदा सम्यक् कृतवान् रामपूजनम् ।
रामाचार्याः प्रसादान्नं तुभ्यं सर्वेभ्य एव हि ॥२७॥

मदत्वेदं मया प्रोक्तं वाक्यं सर्वजनान्प्रति ।
सुहृद्भ्यो बन्धुवर्गेभ्यश्चागतेभ्यस्तथोत्सवे ॥२८॥

अदत्वा ये च भुञ्जीरन् प्रसादं तेऽधमाः स्मृताः ।
रामप्रसाद दानेन सर्वाभीष्ट। प्रसिद्ध्यति ॥२९॥

अतः श्रद्धान्वितो भूत्वा कुर्याच्छ्री राघवार्चनं ।
वाचकाय प्रदातव्यं पूजोपकरणं प्रिये ॥३०॥

भोजयेत्तोषयेद्भक्त्या द्रव्यैर्दिव्याम्बरादिभिः ।
संक्षेपेण मया प्रोक्तं देवि रामार्चनं शुभम् ॥३१॥

रामार्चन प्रभावं तु कोपि वक्तुं न शक्नुयात् ।

धन्यास्ते मानवाः येषां दर्शनात्सर्वसिद्धयः ।
इति ते कथिता देवि रामार्चायाः कथा शुभाः ।।३३।।

हे देवि ! जब तुम पूर्व जन्म में सती नाम वाली थी तब हे देवेशि, एक बार श्री ब्रह्माजी ने शुभ रामार्चा की थी । श्रीरामार्चा का प्रसादान्न मेरे पास नारद जी द्वारा प्रेषित किया था, मैंने वह सब खा लिया । उस समय स्नान के लिये जलाशय पर तुम गई हुई थी । जब स्नान कर आई, तब तुमने प्रसाद का आना सुन पूछा– हे वृषभध्वज ! मेरे हिस्से का प्रसादान्न कहां है ? हे देवि ! प्रेम मग्न हो जाने के कारण मुझे तुम्हारी याद नहीं आई । मैं प्रसाद खा गया, तुम्हारा हिस्सा नहीं रखा । यह कहते, ही हे शिवे ! क्रोध से लाल-लाल आँख कर तुमने मुझे शाप दे दिया । जो आपके उच्छिष्ट खायेंगे, वे श्वान होंगे, इसमें सन्देह नहीं । इतना कहकर तुम चुप हो गई । तब मैं लज्जित हुआ और विधिवत् श्रीराम पूजन किया। श्रीरामार्चा का प्रसाद तुम्हें और अन्य सबों को दिया। प्रसाद वितरण कर मैंने सब लोगों से यह बात कहा कि उत्सव में आये हुये अभ्यागतों, भाई-बन्धुओं और मित्रों को प्रसाद न देकर जो स्वयं प्रसाद खाते हैं, वे अधम कहे जाते हैं । श्रीराम का प्रसाद बाँटने से सब मनोरथ

सिद्ध हो जाते हैं। इसलिये श्रद्धावन्त होकर श्रीरामार्चा करनी चाहिये और पूजोपकरण (पूजा की सामग्री) कथावाचक को दे देना चाहिये। उन्हें भक्तिपूर्वक भोजन करावे, द्रव्य और दिव्य वस्त्रादि दे सन्तुष्ट करे। हे देवि ! संक्षेप में मैंने शुभ श्रीरामार्चा कहा। श्रीरामार्चा की महिमा का वर्णन कोई नहीं कर सकता है। जो भी रामार्चन में लगे हुए हैं और श्रीराम नाम के परायण हैं, वे मनुष्य धन्य हैं, जिनके दर्शन से सर्वसिद्धियाँ मिल जाती हैं। इस प्रकार हे देवि ! मैंने यह शुभ कथा तुमसे कही ।। २१-३३ ।।

सर्वाभीष्टं भवेत्तेषां श्रृणुवन्ति कथयंति ये।
पापिनां भाग्यहीनानां प्रीतिश्चास्मिन्न जायते ।।३४।।

कलौ पाखण्डिनः पापा भविष्यन्ति दुराशयाः।
दांभिका दुष्ट चित्ताश्च लोलुपाः कृपणाः खलाः।।३५।।

जो इसको कहते और सुनते हैं, उन्हें सब अभीष्ट प्राप्त होंगे। पापियों और भाग्यहीनों को इसमें प्रेम नहीं होता है ।। ३४-३५ ।।

अतः खलु भविष्यन्ति निरये दुःखभागिनाः ।
थन पुत्रादिशोकार्ता आधि व्याधि समाकुलाः ।।३६।।

तप्यन्ते त्रिविधैस्तापैः रामार्चन पराङ्मुखा ।।३७।।

इसलिये निश्चय ही वे थन पुत्रादि के शोकों से दुःखित, आधि-व्याधि से पीड़ित, नरक एवं दुःखभागी होंगे । जो श्रीरामार्चा से विमुख हैं, वे तीनों तापों (दैहिक, दैविक, भौतिक) से तपते हैं ।। ३६-३७ ।।

येभ्यः सर्वं सुखं शश्वत्प्रदातुं चेच्छति प्रभुः ।
तेषां प्रीतिर्भवत्येव प्रगल्भा राघवार्चने ।।३८।।

प्रभु जिन्हें नित्य सब प्रकार के सुख देना चाहते हैं उन्हीं की प्रीति राघवर्चिन में होती है ।। ३८ ।।

सद्धर्मनिरतो दान्तो रामार्चन परायणः ।

सर्व भूतहितः साधुः श्रीरामस्यातिवल्लभः ।
यद्यच्चिन्तयते कामं तत्तदाप्नोति निश्चितम् ।।३९।।

सद्धर्म में निरत, इन्द्रियों को वश में रखने वाला, श्रीरामार्चा करने वाला, सभी प्राणियों का हितैषी साधु, भगवान् श्रीराम को बहुत प्रिय होता है । वह जिन-जिन कामनाओं का चिन्तन करता है उन्हें निश्चित रूप में प्राप्त करता है ।।३९ ।।

इहलोके सुखं भुक्त्वा प्राप्नुयाद्रामसन्निधिम् ।
रामरूपामृतानन्दसिन्धौ मग्नो भवेद्ध्रुवम् ।।४०।।

वह इस लोक में सुख भोगकर श्रीराम जी की समीपता प्राप्त करता है और रामरूपी अमृत और आनन्द के समुद्र में निश्चय ही मग्न हो जाता है ।। ४० ।।

इति श्री शिव संहितायां भव्योत्तर खण्डे उमामहेश्वर सम्वादे श्रीरामार्चा माहात्म्ये विमदोपाख्यानवर्णनो नाम षष्टोऽध्यायः ।। ६ ।।

। जय श्रीसीताराम । । इति श्री रामार्चा माहात्म्यं । । जय श्रीसीताराम ।

* समाप्तम् *

आरती क्या है और कैसे करनी चाहिए?

पूजन की त्रुटि आरती से पूर्ति होती है । स्कन्दपुराण के अनुसार –

मन्त्रहीनं क्रिया हीनं यत् कृतं पूजनं हरेः ।
सर्वं सम्पूर्णतामेति कृते नीराजने शिवे ।।

पूजन मन्त्रहीन और क्रियाहीन होने पर भी नीराजन (आरती) कर लेने से सारी पूर्णता आ जाती है ।

आरती देखने का भी बड़ा पुण्य लिखा है । विष्णु धर्मोत्तर में उल्लेख है –

धूपं चारार्तिकं पश्येत् कराभ्यां च प्रवन्दते ।
कुल कोटि समुद्धृत्य याति विष्णोः परं पदम् ।।

आरती से पहले मूल मंत्र से तीन बार पुष्पाञ्जलि देनी चाहिए और ढोल, नगारे, शंख घड़ियाल आदि महावाद्यों तथा जय-जयकार शब्दों के साथ शुभ पात्र में घृत बत्ती या कपूर

से विषम-संख्या की अनेक बत्तियाँ जलाकर आरती करनी चाहिये । साधारणतः पांच बत्तियों से आरती की जाती है । इसे 'पञ्च प्रदीप' भी कहते हैं ।

आरती के पांच अङ्ग होते हैं – प्रथम दीप माला द्वारा, दूसरा जल युक्त शंख से, तीसरे धुले वस्त्र से, चौथे आम्रादि के पत्तों से और पाँचवें साष्टांग दण्डवत से आरती करे।

आरती उतारते (लगाते) समय सर्वप्रथम भगवान की प्रतिमा के चरणों में उसे चार बार, दो बार नाभिदेश में, एक बार मुख मण्डल पर और सात बार समस्त अंगों पर घुमाये, जिससे पूरा-पूरा विग्रह एड़ी से चोटी तक प्रकाशित हो उठे, चमक उठे और दर्शक या उपासक भली-भाँति देवता की रूप छटा को निहारकर हृदयंगम कर सके यही अभिप्राय है । अतः श्रद्धापूर्वक आरती एवं आरती गान करे ।

* श्रीरामजी की आरती *

आरति श्रीरघुनाथ कुँवर की । स्यामल सुन्दर सीतावर की ।।टेक।।
कनक सिंहासन राजत जोरी । दशरथ नन्दन जनक किशोरी ।।
चितवन ललित करत चितचोरी । कोटि मुकुटमनो कुण्डलधर की ।।१।।
चन्द्र वदन अधरन अरुनाई । मधुर हसनि बनमाल सुहाई ।
भूषन रतन किरन छवि छाई । शोभाकर कमलनि धनुसर की ।।२।।
छिन छिन प्रति यह रूप निहारौं । युग पद 'कंज' न नेक विसारौं।
सुन्दरता पर त्रिभुवन वारों । ब्रह्म परात्पर अवधेश्वर की ।।३।।
आरति श्रीरघुनाथ कुँवर की ।।

* श्री जानकी जी की आरती *

आरति जनक-लली की कीजै ।।टेक।।

सुबरन-थार वारि घृत-बाती, तब निज वारि रूप-रस पीजे ।

गौर-बरन सुन्दर तन सोभा, नख-सिख छवि नैननि भरि लीजै।

सरस माधुरी स्वामिनि मेरी, चरन कमल में चित नित दीजे ।

आरति जनक-लली की कीजै ।।

* श्री हनुमान्-ललाजी की आरती *

आरति कीजै हनुमान लला की । दुष्टदलन रघुनाथ कला की ।टेक।

जाके बल से गिरवर काँपै । रोग दोष जाके निकट न झापै ।

अंजनि पुत्र महा बलदाई । सन्तन के प्रभु सदा सहाई ।

दे बीरा रघुनाथ पठाये । लंका जारि सीय सुधि लाये ।

लंका-सो कोटि समुद्र-सी खाई । जात पवनसुत बार न लाई ।
लंका जारि असुर संहारे । सियाराम जी के काज सँवारे ।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे । आनि सजीवन प्रान उबारे ।
पैठि पताल तोरि जम कारे । अहिरावन की भुजा उखारे ।
बायें भुजा असुर दल मारे । दहिने भुजा सन्तजन तारे ।
सुर नर मुनि आरती उतारे । जय जय जय हनुमान उचारे ।
कंचन थार कपूर लौ छाई । आरति करत अञ्जना माई ।
जो हनुमान जी की आरति गावै । बसि बैकुण्ठ परम पद पावै ।
लंक विध्वंस कीन्ह रघुराई । तुलसीदास प्रभु कीरति गाई ।

।। इदमार्तिकं साङ्गाय सपरिवाराय भगवते श्रीरामचन्द्राय नमः ।।

***

* कथान्ते हवनम् *

कथा श्रवण के बाद हाथ भर लम्बी-चौड़ी वेदी का निर्माण कर वेदी पर पञ्चभू संस्कार करे। इसके बाद अग्नि स्थापन करे।

* *अग्नि का ध्यान मन्त्र* *

ॐ चत्वारि शृङ्गास्त्रयो अस्य पादाद्वे शीर्षे सप्तहस्तासो अस्य त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महादेवो मर्त्यां आविवेश।

ॐ मुखं यःसर्वदेवानां हव्यभुक् काव्यभुक् तथा।
पितृणां च नमस्तुभ्यं विष्णवे पावकात्मने॥

प्रार्थना –

ॐ अग्ने शाण्डिल्यगोत्र मेषध्वजः! मम सम्मुखो भव।

'**ॐ पावकाग्नये नमः**' इस मन्त्र से पंचोपचार अग्नि का पूजन करे।

तत्पश्चात् यथाशक्ति तिल का आधा चावल, चावल का आधा जव, जौ का आधा गुड़, यथेष्ट घृत तथा पञ्चमेवा मिला साकल्य से नवग्रहों के लिये आहुति प्रदान करे। फिर प्रधान देवता भगवान राम के लिये १०८ बार आहुति केवल घृत से प्रदान करे।

नवग्रह होमः –

'ॐ आ कृष्णेन०' से 'समुषद्भिरजायथाः' तक निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर नवग्रहों के लिए आहुति प्रदान करे ।

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च । हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन् ।। सूर्याय स्वाहा, इदं सूर्याय न मम ।

ॐ इमं देवा ऽअसपत्न ꣳ सुवद्ध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ꣳ राजा ।। चन्द्रमसे स्वाहा, इदं चन्द्रमसे न मम ।

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवःककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम् । अपा ꣳ रेता ꣳ सि जिन्वति ।। भौमाय स्वाहा, इदं भौमाय न मम ।

ॐ उद् बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ꣳ सृजेथामयं च अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत । बुधाय स्वाहा, इदं बुधाय न मम ।

ॐ बृहस्पतेऽअति यदर्योऽअर्हाद्युमद् विभाति क्रतु-मज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ।

बृहस्पतये स्वाहा, इदं बृहस्पतये न मम ।

ॐअन्नात्परिश्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ꣳ शुक्रमन्धस ऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु । शुक्राय स्वाहा, इदं शुक्राय न मम ।

ॐ शं नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये । शं योर-भिस्रवन्तु नः । शनैश्चराय स्वाहा, इदं शनैश्चराय न मम ।

ॐ कया नश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधः सखा । कयाशचिष्ठयावृता ।। राहवे स्वाहा, इदं राहवे न मम ।

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्याऽअपेशसे । समुषद्भिरजायथाः ।। केतवे स्वाहा, इदं केतवे न मम ।

आवरणदेवतानां हवनम् –

पुनः 'ॐगौर्य्यै स्वाहा०' से 'ॐ हनुमते स्वाहा' पर्यन्त पढ़ कर मण्डपस्थ आवरण देवताओं का हवन करना चाहिए ।

१. ॐ गौर्य्यै स्वाहा ।
२. ॐ गणपतये स्वाहा ।
३. ॐ महाशक्तये स्वाहा ।
४. ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा ।
५. ॐ महादुर्गायै स्वाहा ।
६. ॐ गायत्र्यै स्वाहा ।
७. ॐ सावित्र्यै स्वाहा ।
८. ॐ सरस्वत्यै स्वाहा ।
९. ॐ सर्वमातृभ्यो स्वाहा ।
१०. ॐ सर्वसिद्धिदेव्यै स्वाहा ।

११. ॐ बुद्धिदेव्यै स्वाहा ।
१२. ॐ लोकमात्रे स्वाहा ।
१३. ॐ महादेव्यै स्वाहा ।
१४. ॐ देवमात्रे स्वाहा ।
१५. ॐ नवग्रहेभ्यो स्वाहा ।
१६. ॐ दशदिक्पालेभ्यो स्वाहा ।
१७. ॐ महेश्वराय स्वाहा ।
१८. ॐ वास्तुदेवेभ्यो स्वाहा ।
१९. ॐ अष्टलोकपालेभ्यो स्वाहा ।
२०. ॐ वसिठादिभ्यो स्वाहा ।
२१. ॐ अधि-प्रत्यधिदेवेभ्यो स्वाहा ।
२२. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा ।
२३. ॐ अयोध्यायै स्वाहा ।
२४. ॐ सरय्वै स्वाहा ।
२५. ॐ गङ्गायै स्वाहा ।
२६. ॐ भूशक्त्यै स्वाहा ।
२७. ॐ नलनीलाभ्यां स्वाहा ।
२८. ॐ केशरिणे स्वाहा ।
२९. ॐ सुषेणाय स्वाहा ।
३०. ॐ ऋक्षराजाय स्वाहा ।
३१. ॐ अङ्गदाय स्वाहा ।
३२. ॐ सुग्रीवाय स्वाहा ।
३३. ॐ विमलादिशक्तिभ्यो स्वाहा ।
३४. ॐ विभीषणाय स्वाहा ।
३५. ॐ अष्टमन्त्रिभ्यो स्वाहा ।
३६. ॐ सपत्नीकाय दशरथाय स्वाहा।
३७. ॐ सपत्नीकाय लक्ष्मणाय स्वाहा।
३८. ॐ सपत्नीकाय शत्रुघ्नाय स्वाहा।
३९. ॐ सपत्नीकाय भरताय स्वाहा।
४०. ॐ हनुमते स्वाहा ।

इसके पश्चात् 'ॐ रामाय स्वाहा' से लेकर 'ॐ नारायणाय स्वाहा' पर्यन्त पढ़ कर प्रत्येक को आहुति देवे तथा 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय स्वाहा' अथवा 'ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे०' इस मन्त्र से एक सौ आठ आहुति प्रदान करे ।

'ॐ रामाय स्वाहा, ॐ रामभद्राय स्वाहा, ॐ रामचन्द्राय स्वाहा, ॐ नारायणाय स्वाहा।' इत्याहुति-प्रदानानन्तरमाज्येन। ' ॐ नमो भगवते वासुदेवाय स्वाहा' अथवा 'ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदं समूढमस्य पा ͦͦ͡ सुरे स्वाहा ।' इति मन्त्रेणाऽष्टोत्तरशतं जुहुयात् ।

स्विष्टकृद्धवनम् –

तदनन्तर 'ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा' इसका उच्चारण कर शेष साकल्य-सामग्री इकट्ठी ही अग्नि में 'ॐ अग्नये स्विष्टकृते न मम' पढ़ कर परित्याग करे।

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वहा' इत्युच्चार्य्याऽवशिष्टसाकलं वह्नौ हुत्वा, 'इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ।' इति परित्यागं कुर्यात् ।

ततो भूरादिनवाहुतयः

इसके बाद 'ॐ भूः स्वाहा०' से लेकर 'इदं प्रजापतये न मम' तक पढ़ कर आहुति एवं प्रणीतापात्र में घृत परित्याग करे ।

'ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम, ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम, ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम । ॐ त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ꣳ सि प्रमुमुग्धस्मत् स्वाहा ।। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ।

ॐ स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो ऽअस्या उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुण ꣳ रराणो वीहि मृडीक ꣳ सुहवो न ऽऐधि स्वाहा ।। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ।

ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्ति पाश्च सत्यमित्वमया ऽअसि । अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज् ꣳ स्वाहा ।। इदमग्नये अयसे न मम ।

ॐ ये ते शतं वरुणं ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः तेभिर्नो ऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा।। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ।

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसोऽ अदितये स्याम स्वाहा ।। इदं वरुणायादित्यायाऽदितये न मम । ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम ।

पुष्पचन्दनताम्बूलादिभिः पूर्णाहुतिः –

संकल्पः – ॐ अद्य साङ्गसायुधसपरिवाराय श्रीरामचन्द्राय प्रीतये यथा सम्पादित सामग्रया वा आज्याहुतिभिः परिपूर्णतासिद्धये पूर्णाहुतिहवनमहं करिष्ये ।

आयुष करणम् –

ॐ त्र्यायुषं-जमदग्नेरिति ललाटे । ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम् । ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषमिति बाहुमूले । ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषमिति हृदि ।

निम्न मन्त्र से स्रुवा में भस्म लेकर ललाटादि में लगावे । इसके पश्चात् नृत्य गीत एवं वाद्य सहित उत्सव करे ।

मन्त्रपुष्पाञ्जलिः –

उसके बाद कपूर की आरती एवं मन्त्र पुष्पांजलि भगवान राम को समर्पित करे ।

फिर हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करे -

आवाहनं न जानामि न जानामि तवार्चनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात् कारुण्यभावेन रक्ष - रक्ष परमेश्वर ॥

मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ।
यत् पूजितं मया देव परिपूर्णम् तदस्तु मे ।।
यदक्षर पदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत् ।
तत् सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ।।
अपराध सहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ।।

इसके पश्चात् हाथ में जल लेकर मास-पक्षादि का उल्लेख पूर्वक-'कृतैतत्०' से 'दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे' तक पढ़ कर भूमि पर जल छोड़ें ।

तदन्तर हस्ते जलमादाय मासपक्षाद्युच्चार्य, कृतैतत् रामार्चन-हवनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफल-प्राप्तर्थमिदं पूर्णपात्रं रजतदक्षिणासहितं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे । पुनर्जलं गृहीत्वा, कृतैत् रामार्चनहवनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं यथासङ्ख्याकान्

ब्राह्मणान् सुवासिनीं वटुककुमारिकामद्याऽहं भोजयिष्ये । तेभ्यस्ताम्बूल-दक्षिणां च दास्ये ।

पुनर्हस्ते जलमादाय, रामार्चाविधिपरिपूर्णार्थं सुपूजिताय आचार्याय इमां सोपसकृतां गां पीठसहित-समस्तवस्तूनि च प्रदास्ये। पुनर्जलमादाय, रामार्चाहवन-कर्मणि न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थममुकाऽमुकगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो भूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे ।

विसर्जनम् –

तत्पश्चात हाथ में अक्षत लेकर 'यान्तु देवगणाः०' से 'तत्र गच्छ हुताशन ।' पर्यन्त पढ़ कर मण्डपस्थ देवताओं एवं अग्नि का विसर्जन करे ।

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम् ।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च ।।

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ ! स्वस्थाने परमेश्वर ।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन ।।

तिलकाशीर्वादः —

पुनः आचार्य को चाहिए कि वह 'पुनस्त्वादित्या०' तथा 'स्वस्तिस्तु या०' से 'ह्याशीर्वादपरायणाः' तक पढ़ कर यजमान के मस्तक पर तिलक लगाकर नारिकेल फल आशीर्वाद रूप में प्रदान करे ।

**ॐ पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्मणो वसुनाथ यज्ञैः ।
घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ।।**

अथवा

स्वस्तिस्तु या विनाशाख्या धर्म-कल्याण-वृद्धिदा ।
विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः ।।
नारदाद्या ऋषिगणा ये चाऽन्ये च तपोधनाः ।
भवन्तु यजमानस्य ह्याशीर्वादपरायणाः ।।

रक्षाबन्धनम् –

उसके बाद यजमान के दाहिने हाथ में 'यदाबध्नन्०' मन्त्र से आचार्य रक्षाबन्धन करे ।

ॐ यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्य ँ शतानीकाय सुमनस्यमानाः तन्मऽ आबध्नामि शतशारदायायुष्मान् जरदष्टिर्यथासम्।।

* इति कथान्ते हवन विधिः समाप्तः *

श्रीराम वन्दना

श्री रामचन्द्र रघुपुङ्गव राजवर्य राजेन्द्र राम रघुनायक राघवेश ।
राजाधिराज रघुनन्दन रामचन्द्र दासोऽहमद्य भवतः शरणागतोऽस्मि।।

श्री जानकी वन्दना

उद्भवस्थितिसंहारकारिणी क्लेशहारिणीम् ।
सर्वश्रेयस्करी सीता नतोऽहं रामवल्लभाम् ।।

श्री हनुमत्-वन्दना

मंगल-मूरति मारुत-नन्दन । सकल-अमंगल मूल निकन्दन ।।१।।
पवन तनय सन्तन हितकारी । हृदय विराजत अवध बिहारी ।।२।।
मातु-पिता-गुरु,गनपति, सारद। सिवा समेत संभु, सुक, नारद ।।३।।
चरन बंदि बिनवौं सब काहू । देहु रामपद - नेह - निबाहू ।।४।।
बन्दौ राम - लखन -बैदेही । जे तुलसी के परम सनेही ।।५।।

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं,
दनुजवन कृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं,
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ॥

श्री सीतारामार्पणमस्तु ।

श्रीराम की दयालुता

अपराध अगाध भएँ जन ते, अपने उर आनत नाहिन जू ।
गणिका गज गीध अजामिल के गति पातक-पुञ्ज सिराहिन जू ॥
लिए-वारक नाम सुधाम दियो, जेहि धाम महामुनि जाहिं न जू ।
तुलसी भजु दीनयालहिं रे, रघुनाथ अनाथहिं दाहिन जू ॥

श्रीराम की उदारता (भजन)

ऐसो को उदार जग माहीं।
बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर, राम सरिस कोउ नाहीं ।।
जो गति जोग विराग जतन करि, नहिं पावत मुनि ग्यानी।
सो गति देत गीध सबरी कहुँ, प्रभु न बहुत जियँ जानी ।।
जो सम्पति दससीस अरपि करि, रावन सिव पहँ लीन्ही।
सो सम्पदा विभीषण कहँ, अति सकुच सहित हरि दीन्हीं ।।
तुलसिदास सब भाँति सकल सुख, जो चाहसि मन मेरो।
तो भजु राम, काम सब पूरन करैं कृपानिधि तेरो ।।

श्रीराम का मानव-चरित्र सब के लिये अनुकरणीय है। दो महान अवतार मानवावतार हुए हैं। एक राम-अवतार, दूसरा कृष्ण-अवतार। श्री कृष्ण का अवतार सहज ही समझ में नहीं आता, क्योंकि उसकी सारी लीला ईश्वर-लीला ही रही। श्रीराम की लीला ईश्वरीय होते हुए भी पूर्ण मर्यादित मानव चरित्र में हुई। इसलिए वह मानव मात्र के लिए अनुकरणीय हुई और समझने में भी बड़ी सरल है। श्रीराम का जीवन मानव मात्र के जीवन से घुला-मिला होने के कारण सबको अधिक प्रिय है और आसानी से समझ में आ जाता है। रामचरित्र में मानव भगवान राम अर्थात् मानव के ही मर्यादित चरित्र को देखता है। अतः भगवान राम के चरित्र का अनुसरण कर ही मानव मात्र मानव-जीवन को कलिकाल में सार्थक बना सकता है। इस सन्दर्भ में गोस्वामी जी का यह कथन बहुत ही प्रासंगिक है –

सोइ सर्वज्ञ गुनी सोइ ज्ञाता। सोइ महि मंडित पंडित ज्ञाता ।।
धर्म परायन सोइ कुल त्राता। रामचरन जाकर मन राता ।।

नीति निपुन सोइ परम सयाना । श्रुति सिद्धान्त नीक तेहि जाना ।।
सोइ कवि कोबिद सोइ रनधीरा । जो छल छाड़ि भजै रघुबीरा ।।

और भी किसी कवि का कथन है –

मजा नर जन्म लेने का, भजो मन राम वैदेही ।
कहें बुध वेद सत संमत, जगत में सार है एही ।।

ॐ श्रीरामं शरणं गच्छामि !

◈ आत्म निवेदन ◈

नमो रामचन्द्रम् नमो रामचन्द्रम् ।टेक। भिन्न भिन्न योनि में चला मारा मारा ।
हे नाथ ! तुम ही हो मेरा सहारा । थोड़ी कृपा हो बने सार्थक जीवन ।१।
बहुत ही कृपा जो दिया मानव जीवन । ऋषिगण सफल भये कर भक्ति तेरी ।
करत सर्व देव ही स्तुति तेरी । ऋषिगण सफल भये कर भक्ति तेरी ।
भगवन सुनो प्रार्थना एक मेरी । दो दर्शन अब न करो पल देरी ।२।
तू ही मेरे हो – सखा-गुरु-भ्राता । स्वामी तथा देव पिता और माता ।
तू ही मेरे इष्टदेव हो भगवन् । जीवन बिताऊँ करत पाठ-अर्चन ।३।
सीता लखन साथ दर्शन में लाना । सुग्रीव-विभीषण और शंकर को लाना ।
सरयू-अयोध्या के दर्शन कराना । हनुमन्तलाल जी के दर्शन कराना ।४।
हे नाथ ! आओ हृदय रूप में । दाहिन लखन बाम में हों श्रीसीता ।
तेरे सामने हों श्री हनुमन्तलला जी । शंकर विभीषण-सुग्रीव तेरे मीता ।५।

तेरे गुणों को कहाँ तक मैं गाऊँ। न कविता कला जो कि तुमको रिझाऊँ।
गाता रहूँ राम राम और सीता। सम्भव तभी जब बनो मेरे मीता। ६।
तेरे नाम से आदि पूज्य भय गणेशः। करत तेरा गुन-गान महेशः सुरेशः।
तेरा नाम लेकर तो प्रह्लाद तर गये। तुलसी कबीर और रामानन्द अमर भये। ७।
गिनत नहीं कितने ऋषियों को तारा। भाई भरत शेबरी के सहारा।
राखो निकट इस 'कपिल' के हो राम। श्री राम राम कहूँ चारो याम। ८।
मैं चाहता हूँ सदा तेरी भक्ति। तेरी गान-गाथा को श्रवणानुरक्ति।
सपरिवार सदा राम की धुन गावें। श्रीराम चरणों में मन को लगावें। ९।
'कपिल' राम गावें 'मणि' राम गावे। 'सीताराम' गावें 'हरे राम' गावें।
'मंगला' 'माधुरी' 'उर्मिला' झूम गावें। सीताराम हनुमन्तलला को रिझावें १०।

मूक होइ वाचाल पंगु चढ़इ गिरिवर गहन।
जासु कृपा सो दयाल द्रवउ सकल कलिमल दहन॥
नील-सरोरुह श्याम तरुन अरुन वारिज नयन।
करउ सो मम उरधाम सदा छीर सागर सयन॥

स्रवन सुजस सुनि आयउँ प्रभु भंजन भव भीर ।
त्राहि-त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुबीर ।।
बार-बार वर मागऊँ हरषि देहु श्रीरंग ।
पद सरोज अनपायनी भगति सदा सत संग ।।
परमानन्द कृपायतन् मन परि पूरन काम ।
प्रेम भगति अनपायनी हेहु हमहि श्रीराम ।।
भगत कल्पतरु प्रनत हित कृपासिन्धु सुखधाम ।
सोइ निज भगति मोहि प्रभु देहु दया करि राम ।।
मो सम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुबीर ।
अस विचारि रघुवंश मनि हरहु विषम भवभीर ।।
कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभहि प्रिय जिमि दाम ।
तिमि रघुनाथ निरन्तर प्रिय लागहु मोहि राम ।।

श्री सीताराम जी महाराज की जय !

******

◈ रामचन्द्र-स्तुतिः ◈

नमामि भक्तवत्सलं कृपालु-शील-कोमलं
भजामि ते पदाम्बुजं अकामिनां स्वधामदम् ।
निकाम-श्याम-सुन्दरं भवाम्बुनाथमन्दरं
प्रफुल्ल-कञ्ज-लोचनं मदादि-दोष-मोचनम् ।।१।।

प्रलम्ब-बाहु विक्रमं प्रभो-ऽप्रमेय-वैभवं
निषङ्ग-चाप-सायकं धरं त्रिलोकनायकम् ।
दिनेश-वंश-मण्डनं महेश-चाप-खण्डनं
मुनीन्द्र-सन्त-रञ्जनं सुरारि-वृन्द-भञ्जनम् ।।२।।

मनोज-वैरि-वन्दितं अजादि-देव-सेवितं
विशुद्ध-बोध-विग्रहं समस्त-दूषणापहम् ।
नमामि इन्दिरापतिं सुखाकरं सतां गतिं
भजे सशक्ति- सानुजं शचीपति-प्रियानुजम् ।।३।।
त्वदङ्घ्रिमूल ये नरा भजन्ति हीनमत्सराः
पतन्ति नो भवार्णवे वितर्क-वीचि-सङ्कुले ।
विविक्त-वासिनः सदा भजन्ति मुक्तये मुदा
निरस्य इन्द्रियादिकं प्रयान्ति ते गतिं स्वकम् ।।४।।
त्वमेकमद्भुतं प्रभुं निरीहमीश्वरं विभुं
जगद् गुरं च शाश्वतं तुरीयमेव केवलम् ।

भजामि भाववल्लभं कुयोगिनां सुदुर्लभं
स्वभक्त-कल्प-पादपं समस्त-सेव्यमन्वहम्।।५।।
अनूप-रूप-भूपतिं नतोऽहमुर्विजापतिं
प्रसीद मे नमामि ते पदाब्जभक्ति देहि मे।
पठन्ति ये स्तवं इदं नरादरेण ते पदं
व्रजन्ति नाऽत्र संशयस्त्वदीय-भाव-संयुतम्।।६।।

इति श्रीमद् गोस्वामि तुलसीदास कृत श्रीरामचन्द्र-स्तुतिः समाप्तः

प्रकाशक
श्री दुर्गा पुस्तक भण्डार (प्रा०) लि०
५२७ए/२, कक्कड़ नगर, (दरियाबाद), इलाहाबाद. ३
ब्रांच - जानसेनगंज, इलाहाबाद- ३
Visit us at - www. durgapustak.com
e-mail - sampark@durgapustak.com